राँची विश्वविद्यालय, राँची

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

मानविकी संकाय (हिन्दी विभाग)

वर्ष : 2024

''डॉ० परशुराम शुक्ल के बाल कहानियों में वैयक्तिक नैतिकताः एक अनुशीलन''

शोध निर्देशक :

डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह

(सहायक प्रोफेसर)
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
(झारखण्ड)

शोधार्थी :

बिमला बेक
प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची
(झारखण्ड)

शोध विषय का अभिप्राय :

हिन्दी कहानियों का इतिहास भारत में सदियों पुराना है। प्राचीन काल से ही कहानियाँ भारत में बोली सुनी और लिखी जा रही है। ये कहानियाँ ही है जो बच्चों का असंभव कार्य को भी करने को तैयार हो जाते है और अत्यंत कठिनाइयों के बावजूद ज्यादातर कार्य पूरे भी होते है। हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है। बाल कहानियाँ लिखने वाले कुछ लेखक डॉ० परशुराम शुक्ल, डॉ० प्रकाश मनु, प्रहला श्रीमाली, क्षमा शर्मा, उषा यादव एवं राजकिशोर सिंह, हरिकृष्ण देवसरे, इत्यादि हैं।

(शिवाजी महाराज को उनकी माता ने कहानी सुना सुनाकर इतना महान बना दिया कि शिवाजी महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज बन गए।) 'प्रौढ़ रूचि के उद्देश्य का समर्थन किया गया हो'। बालबोध के स्तर पर ऐसी कहानियों का यदि वे कहानी है तो मनोवैज्ञानिक महत्व कम नहीं। बाल्यावस्था चरित्र गठन की भी अवस्था होती है। चरित्र गठन मनोतत्वों से होता है। ऐसी स्थिति में ये कहानियाँ बालक के व्यक्तित्व को सही दिशा में विकसित में सहयोग प्रदान करती है।

कहानी विधा की उपर्युक्त प्रभाव शीलता और वैविध्य को स्वातन्त्रयोंत्तर बाल साहित्यकारों ने पहचाना। इस काल की कहानियों की काफी विस्तृत करने का प्रयत्न हुआ लोक कथा के रूप में विकसित हिन्दी की बाल कहानी इसी समय आधुनिक स्वरूप ग्रहण करती है।

अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी बाल कहानी को वर्गीकृत भी किया जा सकता है। बाल कहानी का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है।

1. उपदेशात्मक कहानियाँ
2. पुश–पक्षी सम्बधी कहानियाँ
3. ऐतिहासिक कहानियाँ
4. साहसिक कहानियाँ
5. वैज्ञानिक कहानियाँ

6. मनोवैज्ञानिक कहानियाँ
7. मुहावरों की कहानियाँ
8. गीत कथाएँ
9. परी कथाएँ

उपर्युकत वर्गीकरण में विषय और शैली, दोनों का मिश्रण हो गया है। जैसे, उपदेशात्मक कहानियाँ गीत कथाएँ भी हो सकती है और पशु–पक्षी सम्बंधी कहानियाँ उपदेशात्मक भी हो सकती है। तथा साहसिक भी।

<u>शोध प्रक्रिया का वैशिष्ट्य :</u>

वह साहित्य जो बालकों में जिज्ञासा, विचार तथा सर्जनशीलता को प्रोत्साहित करके जीवन को समझने में सहायक होता है बालकों में प्रेम, त्याग, मानवता, निःस्वार्थता, राष्ट्रीयता आदि भाव विकसित करता है, कठिनाइयों, विपदाओं से जूझना सिखाता है वह बाल साहित्य व बाल कहानी है विद्यालयी विषयों की नीरसता के विपरीत जो लेखन रोचक ढंग से ज्ञान उपलब्ध कराता है अतिरिक्त वाचन के लिए प्रेरित करता है बालक का मनोरंजन कराता है। वह बाल साहित्य एवं बाल कहानी है।

बालकों की शारीरिक और मानसिक आयु उनकी वैयक्तिकता, रूचि, इच्छा आवश्यकता तथा ग्रहण–शक्ति को ध्यान में रखते हुए जो साहित्य लिखा जाता है। वह बाल साहित्य एवं बाल कहानी है।

<u>शोध विषय का निष्कर्ष :</u>

किसी भी देश की वास्तविक संपत्ति उस देश के बालक होते हैं बालकों के सही पालन–पोषण और योग्य शिक्षा–दीक्षा से प्रगतिशील और उपयोगी समाज का निर्माण होता है इसलिए बालकों के शारीरिक विकास के साथ उनका मानसिक तथा भावनिक विकास भी आवश्यक है। बालकों को जो शिक्षा दी जाती है चाहे माता–पिता द्वारा, चाहे विद्यालयी पाठ्यक्रम द्वारा चाहे साहित्य के माध्यम से वही शिक्षा बालक के भविष्य की दिशा निर्धारित करती है। बालकों के लिए जिस साहित्य एवं कहानी की निर्मित की जाती है वह मात्र

मनोरंजन के लिए नहीं होता। यद्यपि बड़े प्रतिशत में मनोरंजन उद्देश्य होता है। पर मुख्यतः इसके द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास अभीष्ट होता है।

बाल साहित्य क्या है? इसका उद्देश्य क्या है यह कैसा होता है? ये प्रश्न सहज ही सामने आते हैं जिनका उत्तर देने का प्रयत्न विभिन्न दृष्टिकोणें से होना चाहिए।

शोध विषय का चयन :

भारत सरकर 2020 को नई शिक्षा नीति (एन.ई.पी) घोषित की गई थी, यह नीति, भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव लाने के लिए बनाई गई है। इस नीति के तहत, स्कूली शिक्षा में कई बदलाव किए गए है।

इसके अंतर्गत स्कूली शिक्षा को ५+३+३+४ के रूप में बदल दिया गया है पहले ५ वर्ष अर्ली स्कूलिंग के होंगे। इसे अर्ली चाइल्डडुड पॉलिसी का नाम दिया गया है जिसमें तीन साल के बच्चों को भी स्कूली शिक्षा के अंतर्गत शामिल किया गया है इन सभी बच्चों को पहले पाँच सालों तक मातृभाषा में शिक्षा देने का फैसला किया गया है। इसलिए पढ़ाने के तरीकों में बदलाव किया गया है। शोध का विषय चयन करते हुए लगा कि हिन्दी बाल साहित्य के बाल कहानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पाँच से बारह साल के बच्चों को इनके माध्यम से बड़ी से बड़ी समस्या भी आसानी से समझाया जा सकता है। इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए हमारा बाल साहित्य के बाल कहानी भी तैयार है, उसकी कैसी प्रवृतियाँ रही है। इसलिए मेरे मन में बाल साहित्य के बाल कहानी का वैयक्तिक नैतिकता अनुशीलन पर शोध करने का विचार आया।

शोध विषय का संक्षिप्त परिचय :

बाल कहानी पर विचार करते हुए इसका अर्थ गन्वेषणा करने से स्पष्ट होता हे कि जो कहानी बालकों के लिए लिखा जाता है, वह बाल कहानी है।

यह ऐसा बाल कहानी होता है जो देश और समाज के भावी निर्माता होता है इस दृष्टि से अर्थ गाम्भीर्य और बढ़ जाता है। बाल कहानी की

उपादेयता आज के तकनीकी युग में बढ़ रही है ऐसा इसलिए क्योंकि तकनीकी ने बच्चों के जीवन में बाल कहानी के लिए गुंजाइश तथा स्पेस को कम कर दिया है। एक ऐसे दौर में जब बच्चे कुछ ही वर्ष के होते ही स्मार्ट फोन, लैपटॉप जैसी युक्तियों से सुपरिचित हो जाते है तथा इन्हें बच्चे चलाने की कला सीख लेते है ऐसे में जरूरी हो जाता है कि उन्हें किस्से, कहानियों, कविताओं तथा छंदों से जोड़े रखा जाए। इसमें बाल कहानीकारों की भूमिका बढ़ जाती है।

हिन्दी बाल कहानी एक विस्तृत क्षेत्र है। जिसका देश में शानदार इतिहास और वर्त्तमान रहा है। डॉ० परशुराम शुक्ल आधुनिक काल में बाल साहित्य में बाल कहानी के सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। बचपन से इनकी रचनाएँ पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से हम सभी पढ़ते आ रहे है। मुख्य रूप से इनके बाल कहानी जिसमें सिर्फ बिल्ली, चूहा, शेर, बाघ जैसे जानवर के माध्यम से संवाद संप्रेषण नहीं करता है। उनके बाल कहानी में वैज्ञानिकता की झलक भी देखने को मिलती है जिसके माध्यम से छोटे–छोटे बच्चों के मन में बाल्यकाल से ही कम्प्यूटर रोबोट वैज्ञानिक शब्द उत्सुकता पैदा करते हैं जानकारी जुटाने पर पता चला कि पत्र–पत्रिकाओं के अलावे डॉ० परशुराम शुक्ल की अबतक बाल कहानी अत्यधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी है। किताबों को पढ़ने पर मुझे लगा कि इनकी रचनाएँ हिन्दी बाल साहित्य के बाल कहानी की प्रवृत्तियों को समझने के लिए एक सामग्री की तरह है। जिसका उपयोग मैं अपने शोध में कर सकती हूँ।

<u>शोध का उद्देश्य :</u>

बाल साहित्य में बाल कहानी से संबंधित नये तथ्य, नई संभावनाएँ हमेशा बनी रहेगी। जिसका अन्वेषण इस शोध का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। चूँकि डॉ० परशुराम शुक्ल जी के बाल कहानी में उनके समय के समाज व परिवेश की सूक्ष्म अभिव्यक्ति मिलती है, जिसका अवलोकन उन्होंने तटस्थ भाव से किया है। अतः उनकी जीवन–दृष्टि अन्य कहानिकारों के दृष्टिकोण से कितनी

भिन्न है उनमें किस हद तक समानता है, उनके कहानियों में बच्चों को किस प्रकार उल्लेखित किया गया है इन तथ्यों से संबंधित निष्कर्ष इस शोध के उपरांत ही प्राप्त हो सकते हैं।

- बाल कहानी से बच्चें का परिचय कराना तथा उसके प्रति रूचियों में वृद्धि करना।
- बाल कहानी में चित्रित पात्रों का अध्ययन करना।
- बच्चों के समक्ष उसके आन्तरिक जगत के यथार्थ को उजागर करना।
- डॉ0 परशुराम शुक्ल के बाल कहानी लेखन के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य में हुए व्यापक परिवर्त्तन की जानकारी व विश्लेषण।

शोध विषय की उपादेयता :

बाल कहानी शिक्षा से ही बालकों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास संभव होता है। किताबों से बालक को सीमित ज्ञान ही मिलता है। बाल कहानी से उसे सहज रूप में जीवन की शिक्षा भी मिलती है बालक के मन में अंकुर के तरह बालमन में बैठ जाते है। और प्रेरणा मिलती रहती है। चांद, सुरज जैसे पुराने विषयों पर रचनाकार का नवीन दृष्टिकोण उसे नव्यता प्रदान करता है।

बालक अपने मन का राजा और बालिका अपने मन की रानी होती है। इसलिए राजा–रानी परियों की बाल कहानी की रचनाएँ बालमन की अनुभूतियों का ही चित्रण है। बालमन की अनुभूतियों का चित्रण ही बाल कहानी रचनाकार की सफलता है। हमारे बाल कहानीयों के माध्यम से बच्चों तक पहुँचने की परम्परा रही है। बाल कहानी के परम्परावादी कहानीकारों का मत है कि लोक साहित्य की चमत्कारी चीजों को बाल कहानी में जगह देना देश की सभ्यता संस्कृति की मजबूती के लिए जरूरी है। वहीं राजकुमार–राजकुमारियाँ परीलोक, भूत–प्रेत, दानव आदि चीजों से इनके मानसिक शक्ति का भी विकास होता है। मोबाइल और मीडिया, के खतरे में पड़े बालकों को बाल कहानी के

माध्यम से सहारा दिया जा सकता है। शोध के माध्यम से बच्चों को समझने की कोशिश होगी कि बाल कहानी के माध्यम से सभी बच्चों तक कम उम्र में अच्छी चीजें पहुँचा सके। इसके माध्यम से उनके मनोविज्ञान को समझते हुए उन्हें नैतिक बातें सिखाई जा सकती है। थोथी शिक्षाप्रद कहानियाँ उनके मन में अरूचि ही पैदा करती है।

शोध प्रविधि :

शोध कार्य में हिन्दी बाल साहित्य की बाल कहानी में उपलब्ध विभिन्न रचनाओं की मदद लूंगी। मुख्य रूप से साहित्यकार डॉ० परशुराम शुक्ल द्वारा रचित बाल साहित्य की बाल कहानी का अध्ययन करूगी। इसके लिए मैंने उनकी पाँच, छः पुस्तकों या किताबों का चयन किया है। साथ ही पत्र–पत्रिकाओं की भी मदद ली जाएगी। शोध प्रबंध में खास तौर से साहित्यिक शोध की समाज शास्त्रीय एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धतियाँ का प्रयोग किया जाएगा।

1. सर्वेक्षण विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. आलोचनात्मक विधि एवं तुलनात्मक विधि
4. सहायक सामग्री
5. पुस्तकालय अवलोकन
6. पुस्तकावलोकन
7. इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री।

पूर्ववर्ती शोधकार्य :

1. हिन्दी बाल कविता में प्रयोग संदर्भ परशुराम शुक्ल–सुधा मिश्राः बरफतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल, गाइड–डॉ० आभा वाजपेई।
2. हिन्दी बाल कविता में प्रकृति चित्रण परशुराम शुक्ल के संदर्भ में नीरज कुमार बरोलियाः जीवाजी विश्वविद्यालय; डॉ० आभा दीक्षित।

3. डॉ० परशुराम शुक्ल के बाल काव्य में कल्पना और यथार्थ–जयश्री अयंगर, उच्च शिक्षा शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (कर्नाटक शाखा) गाइड–टी०जे० प्रभाशंकर।

प्रथम अध्याय :

प्रथम अध्याय में डॉ० परशुराम शुक्ल के व्यक्तित्व पर विचार किया गया है। जिसमें जन्म और बचपन, शिक्षा, आजीविका, विवाह परिवार, तथा आन्तरिक व्यक्तित्व और बाह्‌य व्यक्तित्व, पुरस्कार, सम्मान एवं अन्य साहित्यिक उपलब्धियाँ पर विचार किया गया है। तथा 'शुक्ल' जी के कृतित्व पर विचार करते हुए जिसमें बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास और बाल धारावाहिक, बाल एकांकी एवं नुक्कड़ नाटक, सूचनात्मक बाल साहित्य और अन्य पर विस्तार से विचार किया जाएगा।

दूसरा अध्याय :

दूसरा अध्याय में डॉ० परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य और बाल कहानी पर विचार करते हुए तथा बाल साहित्य का इतिहास, महत्त्व को देखते हुए और बाल कहानी के उद्‌भव और विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बाल साहित्य और बाल कहानी के संबंध में विदेशी और भारतीय विद्धानों के विचार, उपयोगिता, साहित्य की विधाएँ, कहानी के स्वरूप पर विशेष विचार किया जाएगा।

तृतीय अध्याय :

इसमें डॉ० परशुराम 'शुक्ल' का रचना पर एक विश्लेषणात्मक दृष्टि डालते हुए उनकी प्रकाशित 'बाल कहानी' की अन्तवस्तुओं की वैज्ञानिक छानबीन और विवेचन करते हुए उनमें उपस्थित विविध आयामों की जाँच पड़ताल की जायेगी।

चतुर्थ अध्याय :

इस अध्याय में डॉ० परशुराम शुक्ल के कहानी रचना में नीतिशास्त्र, नैतिकता का इतिहास, विशेषताएँ, आवश्यकता, उपयोगिता तथा नैतिकता के विभिन्न प्रकार सामाजिक–सांस्कृतिक, व्यक्तिगत, व्यावसायिक, राजनैतिक नैतिकता पर विचार किया जाएगा।

पंचम् अध्याय :

इस अध्याय में डॉ० परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में आस्था, विश्वास, धार्मिक आडम्बरों का विरोध, पर्व, त्योहार, विश्वबंधुत्व की भावना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास पर विचार किया जाएगा।

षष्टम् अध्याय :

इस अध्याय में डॉ० परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में व्यक्तिगत नैतिकता, माता–पिता एवं परिवार के वयोवृद्ध सदस्यों की सेवा, आज्ञापालन, दया–करूणा, त्याग, बलिदान, क्षमाशीलता, परोपकार, विनम्रता, अनुशासन सदाचार तथा कर्त्तव्य पालन पर विचार किया जाएगा।

सप्तम् अध्याय :

इस अध्याय में डॉ० परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में व्यवसायिक नैतिकता, स्तरीय उत्पादन, उत्पादन में वृद्धि, धन एकत्रीकरण जन सेवा, ईमानदारी के साथ करों का भुगतान, सत्य निष्ठा, श्रम और ईमानदारी से धनोपार्जन पर विस्तार से विचार किया जाएगा।

अष्टम् अध्याय :

डॉ० परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों पर राजनैतिक, राष्ट्र भक्ति एवं देशप्रेम सक्रिय भागीदारी, जनसेवा एवं जनकल्याण, मतदान के प्रति जागरूकता एवं मत का महत्व समझना तथा राजनैतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार का विरोध, प्रजातंत्र और समाजवादी विचार धारा का प्रोत्साहन पर विस्तार से विचार किया जाएगा।

''डॉ० परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में वैयक्तिक नैतिकताः एक अनुशीलन''

भूमिका :

(क) शोध विषय का अभिप्राय

(ख) शोध प्रक्रिया का वैशिष्ट्य

(ग) शोध विषय का निष्कर्ष

(घ) शोध विषय का चयन

(ङ) शोध विषय का संक्षिप्त परिचय

(च) शोध विषय का उद्देश्य

(छ) शोध विषय की उपादेयता

(ज) शोध प्रविधि

(झ) पूर्ववर्ती शोध कार्य

प्रथम अध्याय :

परशुराम शुक्ल का व्यक्तित्व और कृतित्व

व्यक्तित्व

(क) जन्म और बचपन

(ख) शिक्षा और आजीविका

(ग) विवाह और परिवार

(घ) आन्तरिक व्यक्तित्व और बाह्य व्यक्तित्व

(ङ) पुरस्कार, सम्मान एवं अन्य साहित्यिक उपलब्धियाँ

कृतित्व

(क) बाल कविता

(ख) बाल कहानी

(ग) बाल उपन्यास और बाल धारावाहिक

(घ) बाल एकांकी एवं नुक्कड़ नाटक

(ङ) सूचनात्मक बाल साहित्य और अन्य मूल्यांकन

<u>द्वितीय अध्याय :</u>

<u>बाल साहित्य और बाल कहानी</u>

बाल साहित्य

(क) बाल–साहित्य की अवधारणा

(ख) बाल साहित्य का इतिहास

(ग) बाल साहित्य का महत्व

(घ) बाल साहित्य के सम्बंध में विदेशी और भारतीय विद्वानों के विचार

(ङ) बाल साहित्य की विधाएँ

बाल कहानी

(क) बाल कहानी की अवधारणा

(ख) बाल कहानी का उद्‌भव और विकास

(ग) बाल कहानी के सम्बंध में विदेशी और भारतीय विद्वानों के विचार

(घ) बाल साहित्य की उपयोगिता

(ङ) बाल कहानी के स्वरूप

<u>तृतीय अध्याय :</u>

<u>डॉ० परशुराम शुक्ल के बाल कहानी संग्रहों का समीक्षात्मक अध्ययन एवं शिल्पविधान</u>

(क) जंगल की बाल कहानियाँ

(ख) प्राचीन ग्रंथों की बाल कहानियाँ

(ग) शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ

(घ) लोककथाओं पर आधारित बाल कहानियाँ

(ङ) परियों की बाल कहानियाँ

(च) नैतिक बाल कहानियाँ

(छ) प्रेरणादायक बाल कहानियाँ

(ज) वैज्ञानिक बाल कहानियाँ

(झ) ऐतिहासिक बाल कहानियाँ

(ञ) क्रांन्तिकारियों की बाल कहानियाँ

(ट) पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक की बाल कहानियाँ

(ठ) मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक बाल कहानियाँ

(ड) राजा–रानी की बाल कहानियाँ

(ढ) बाल विमर्श की कहानियाँ

(ण) भाषा, शैली, बिम्ब विधान

चतुर्थ अध्याय :

नैतिकता

(क) नीतिशास्त्र

(ख) नैतिकता की अवधारणा

(ग) नैतिकता का इतिहास

(घ) नैतिकता की विशेषताएँ

(ङ) नैतिकता की आवश्यकता और उपयोगिता

नैतिकता के प्रकार

(क) सामाजिक–सांस्कृतिक नैतिकता

(ख) व्यक्तिगत नैतिकता और व्यावसायिक नैतिकता

(ग) राजनैतिक नैतिकता

पंचम् अध्याय :

डॉ० परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में सामाजिक–सांस्कृतिक नैतिकता

(क) आस्था और विश्वास

(ख) धार्मिक आडम्बरों का विरोध

(ग) सर्वधर्म समभाव

(घ) पर्व एवं त्योहार

(ङ) विश्वबंधुत्व की भावना

(च) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

षष्ठम् अध्याय :

परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में व्यक्तिगत नैतिकता

(क) माता–पिता एवं परिवार के वयोवृद्ध सदस्यों की सेवा और आज्ञापालन

(ख) दया और करूणा

(ग) त्याग और बलिदान

(घ) क्षमाशीलता और परोपकार की भावना

(ङ) विनम्रता और अनुशासन

(च) सदाचार और कर्त्तव्यपरायणता

सप्तम् अध्याय :

परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में व्यावसायिक नैतिकता

(क) स्तरीय उत्पादन

(ख) उत्पादन में वृद्धि

(ग) धन एकत्रीकरण के साथ धन का प्रसार

(घ) धनोपार्जन के साथ ही साथ जनसेवा का उद्देश्य

(ङ) ईमानदारी के साथ करों का भुगतान

(च) सत्य निष्ठा, श्रम और ईमानदारी से धनोपार्जन

<u>अष्टम् अध्याय :</u>

<u>परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में राजनैतिक नैतिकता</u>

(क) राष्ट्र भक्ति एवं देश प्रेम

(ख) राजनैतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी

(ग) जनसेवा एवं जनकल्याण की भावना

(घ) मतदान के प्रति जागरूकता एवं मत का महत्व समझना

(ङ) राजनैतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार का विरोध

(च) प्रजातंत्र और समाजवादी विचार धारा को प्रोत्साहन

(छ) मूल्यांकन

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

सहायक ग्रंथ

साहित्यिक एवं शोध पत्रिकाएँ

इंटरनेट

आधार ग्रंथ

1. प्राचीन ग्रंथों की बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
2. जंगल की बाल कहानियाँ, विवेक जयपुर (राज०) 2015–16
3. ऐतिहासिक बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
4. राजा–रानी की बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
5. नैतिक बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
6. शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
7. परियो की बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
8. लोककथाओं पर आधारित बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
9. प्रेरणादायक बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
10. पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक की बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
11. मनोरंजक एवं ज्ञानर्धक कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
12. क्रांन्तिकारियों की बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
13. वैज्ञानिक बाल कहानियाँ, जयपुर (राज०) 2015–16
14. बाल विमर्श की कहानियाँ, संजय प्रकाशन, अशोक बिहार, दिल्ली–110052, 2021
15. विमुक्त जातियों की लोक कथाएँ, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश शासन, भोपाल–462002, 2021

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन, डॉ० आनन्द बक्षी, आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2018
2. हिन्दी और ओड़िया बाल–कविता का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ० निर्मला जेना, आराधना ब्रदर्स, 124 / 152, सी ब्लाक, गोविन्द्र नगर, कानपुर– 208006, 2018
3. हिन्दी बाल साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन, प्रियंका गुप्ता, बुक पब्लिकेशन 106, विराम खण्ड–3, गोमती नगर लखनऊ–226010
4. हिन्दी बाल काव्य का मनौवैज्ञानिक अध्ययन, डॉ० मनोज कुमार, आशा प्रकाशन, कानपुर, 2017
5. हिन्दी बाल साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ० प्रणोति पाटिल, आशा प्रकाशन, 8 / 144, आर्यनगर, कानपुर– 208002
6. हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन डॉ० परशुराम शुक्ल, आराधना ब्रदर्श, कानपुर 2016
7. सतसई काव्य परम्परा और बाल सतसई डॉ० संगीता जगताप आशा प्रकाशन, कानपुर 2017
8. बाल सतसई प्रबोधिनी, डॉ० स्वामी विजयानंद और डॉ० रामबहोरी त्रिपाठी, बुक पब्लिकेशन, लखनऊ 2016
9. हिन्दी बाल कविता की प्रवृत्तियाँ, डॉ० उदय सिंह 'उदय', आशा प्रकाशन कानपुर, 2014
10. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल काव्य में युगबोध, डॉ० उमा सरौनिया, आशा प्रकाशन, कानपुर 2016
11. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल कविता में वैज्ञानिक चेतना, डॉ० डी०आर० राहुल आराधना ब्रदर्स कानपुर–2016

12. हिन्दी बाल साहित्य में मनोरंजन एवं नैतिकता, डॉ० रामशंकर आर्य आराधना ब्रदर्श, कानपुर, 2014

13. हिन्दी बाल कविता में नए प्रयोग डॉ० सुधा मिश्रा, जनवाणी प्रकाशन, प्रा०लि० 30/35–36, गली नं.–9, विश्वास नगर, शाहदरा दिल्ली–110032, 2015

14. समकालीन हिन्दी बाल साहित्य, डॉ0 सुचिता सेठ, अंकित पब्लिकेशन्स, गीतांजली अपार्टमेन्टस, 1926, नाराणियों का रास्ता, जयपुर–302003, 2011

15. बाल कविता में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना, डॉ० शिरोमणि सिंह 'पथ' आशा प्रकाशन कानपुर, 2013

16. समकालीन हिन्दी बाल कविता, राजेन्द्र कुमार शर्मा, फाल्गुनी प्रकाशन, डी–4, जगजीवनराम गली, तीसरा पुस्ता, जगजीत नगर, दिल्ली–110053, 2013

पत्र–पत्रिकाएँ

1.	बाल भारती	महाराष्ट्र	1967
2.	मधुमुस्कान	साप्ताहिक पत्रिका	1990
3.	लोट पोट नन्हें सम्राट	1969	
4.	बालहंस	2015	
5.	हंसती दुनिया	2024	

उपसंहार :

अंत में उपसंहार है। उपसंहार में मैं अपने शोध के निष्कर्ष प्रस्तुत करूँगी। इसके साथ ही डॉ० परशुराम शुक्ल से साक्षात्कार लिया जाएगा जो परिशिष्ट में जोड़ा जाएगा।

धन्यवाद !

शोध निर्देशक :

डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह

(सहायक प्रोफेसर)
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
(झारखण्ड)

शोधार्थी :

बिमला बेक
प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची
(झारखण्ड)

नोट :– *शोध प्रारूप में आवश्यकता पड़ने पर शोध निर्देशक के आदेशानुसार संशोधन व परिवर्तन किए जा सकते हैं।*